Original Research Paper | Education | Volume : 08 | Issue : 02 | Feb 2023 | e-ISSN : 2456-5040

महिला सशक्तिकरण : निर्णय निर्माण में शिक्षा की भूमिका

डॉ. नीता बाजपेयी

सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र, राज्य एनएसएस आधिकारी, छ.ग. शासन

ABSTRACT

भारत में महिला शिक्षा सरकार और नागरिक समाज दोनों के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय है। क्योंकि शिक्षित महिलाएँ देश के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। समाज में शिक्षित महिलाओं को अशिक्षित महिलाओं की तुलना में अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है। शिक्षा से सशक्त होने पर महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता बढ़ जाती है। यद्यपि घर में निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने की महिलाओं की क्षमता को कई कारक प्रभावित करते हैं, लेकिन शिक्षा यहाँ निर्णायक भूमिका निभाती है। हमारे समाज में, महिलाओं को आमतौर पर निम्न सामाजिक स्थिति वाली माना जाता है, जिसने शिक्षा के लिए उनके अवसर और विचारशीलता को और कमजोर कर दिया है। शिक्षा महिला सशक्तिकरण का एक मील का पत्थर है क्योंकि यह उन्हें चुनौतियों का जवाब देने, अपनी पारंपरिक भूमिका का सामना करने और अपने जीवन को बदलने में सक्षम बनाती है। शिक्षा महिलाओं को पितृसत्तात्मक परंपराओं की सामाजिक और पारिवारिक बाधाओं से स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करती है। शिक्षा तक पहुँच के साथ, महिलाओं को मीडिया के प्रति अधिक संपर्क, अपने अधिकारों के बारे में जागरूकता, संसाधनों तक अधिक पहुँच, बेहतर संचार कौशल मिलता है, साथ ही आर्थिक सशक्तीकरण से परिवार के निर्णयों में उनकी बातचीत की शक्ति बढ़ती है और पैसे से संबंधित निर्णयों में उनकी अधिक भागीदारी होती है। अध्ययन में यह पाया गया कि अधिकांश अशिक्षित महिलाओं को अपने बच्चों की शिक्षा, कॉलेज या कोचिंग चुनने, अपने व्यवसाय आदि के बारे में निर्णय लेने में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा था। महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि, व्यवसाय और आय उनके निर्णय लेने की शक्ति से सकारात्मक रूप से संबंधित थे।यह समानता लाने में सहायता करती है और परिवार, समाज और राजनीतिक–आर्थिक व्यवस्था में उनकी स्थिति को सुधारने के साधन के रूप में काम करती है।भारत हाल के वर्षों में महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। महिलाओं की शिक्षा समाज में स्थिति बदलने का सबसे शक्तिशाली साधन, क्योंकि शिक्षा महिला सशक्तिकरण की आधारशिला है। शिक्षा असमानताओं में भी कमी लाती है और परिवार के भीतर उनकी स्थिति को सुधारने के साधन के रूप में कार्य करती है और भागीदारी की अवधारणा को विकसित करती है। इस पत्र का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालना है।

KEYWORDS: सशक्त, विचारशीलता, सशक्तिकरण, पारंपरिक, पितृसत्तात्मक, भागीदारी, राजनीतिक–आर्थिक व्यवस्था।

परिचयः

शिक्षा महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक भेदभाव से लड़ने के लिए उनके अधिकारों और शक्ति के बारे में समझ प्रदान करती है। यह समृद्धि, विकास और कल्याण की कुंजी है (झा, 2014)। शिक्षा तक पहुँच को महिलाओं के निर्णय लेने का एक महत्वपूर्ण निर्धारक माना जाता है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। यह सीखने का एक रूप है जो शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान या अन्य प्रक्रियाओं के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होता है। शिक्षा एक उपकरण बन गई है और साथ ही सामाजिक परिवर्तन का एक घटक भी है जो नए ज्ञान, नए मूल्यों और मानवीय स्थितियों को सुधारने के नए तरीकों को बढ़ावा देता है। शिक्षा, निस्संदेह मानसिक क्षितिज को व्यापक बनाती है और अज्ञानता और अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाती है, यह व्यक्ति को अधिकारों के बारे में जागरूक बनाती है और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करती है। यह पूरी तरह से स्वीकार किया जाता है कि सामाजिक और आर्थिक प्रगति को सुविधाजनक बनाने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महिला शिक्षा को बढ़ावा देना हमारी शैक्षिक नीति का आधार रहा है। हमारे समाज में महिलाओं को आमतौर पर निम्न सामाजिक स्थिति वाला माना जाता है, जिससे शिक्षा के लिए उनके अवसर और विचारशीलता और भी कम हो गई है। शिक्षा महिलाओं को पितृसत्तात्मक परंपराओं की सामाजिक और पारिवारिक बाधाओं से स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करती है। शिक्षा तक पहुँच के साथ, महिलाओं को मीडिया के प्रति अधिक संपर्क, अपने अधिकारों के बारे में जागरूकता, संसाधनों का अधिक उपयोग, बेहतर संचार कौशल मिलता है, साथ ही आर्थिक सशक्तीकरण से परिवार के निर्णयों में उनकी बातचीत की शक्ति बढ़ती है और धन संबंधी निर्णयों में उनकी भूमिका अधिक होती है। कई शोधों ने साबित किया है कि शिक्षा के स्तर का परिवार में महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति से सीधा संबंध है। सदियों से महिलाओं की स्थिति में कई उतार–चढ़ाव आए हैं और वर्तमान में भारतीय समाज शिक्षा और रोजगार के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाकर लैंगिक भेदभाव को खत्म करने का प्रयास कर रहा है। शिक्षा, निस्संदेह मानसिक क्षितिज को व्यापक बनाती है और अज्ञानता और अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाती है, यह व्यक्ति को अधिकारों के बारे में जागरूक बनाती है और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करती है। शोध का उद्देश्य महिलाओं की घरेलू एवं सार्वजनिक मामलों में निर्णय लेने की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करना है। समाज और परिवार में महिला सशक्तिकरण का निर्णय लेने के प्रभाव से गहरा संबंध है। पुरुषों की व्यावसायिक क्षेत्रों में भागीदारी और महिलाओं की घरेलू क्षेत्रों में भागीदारी को दर्शाने वाली पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं ने महिलाओं को निर्णय लेने की उनकी क्षमता में वंचित किया है। निर्णय लेने की प्रक्रिया को घरेलू जिम्मेदारियों में महिलाओं की भागीदारी के संदर्भ में मापा गया है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और महिलाओं के निर्णय लेने को प्रभावित करती है जो महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

Copyright© 2023, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

सामाजिक परिवर्तन में महिला शिक्षा की भूमिका :

शिक्षा महिलाओं को अपने विचार, समझ बनाने में सक्षम बनाती है और परिवारों, समाजों और पूरे राष्ट्र को प्रतिस्पर्धात्मकता हासिल करने में मदद करती है। यह महिलाओं के लिए आजीविका की स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (यूसुफ, 2019) ख70। वास्तव में, महिलाएँ हर समाज का सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। भले ही हर कोई इस तथ्य से अवगत है, लेकिन कोई भी इस तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। परिणामस्वरूप, आज के समाज में महिलाओं को जो महत्व दिया जाता था, वह घट रहा है। महिलाओं को कम आंकने, उन्हें समाज में दोयम दर्जे का दर्जा देने तथा उनके मूल अधिकारों से वंचित करने की इस बढ़ती प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप महिलाओं को सशक्त बनाने की आवश्यकता महसूस की गई। महिलाओं को सशक्त बनाना पूरी दुनिया में काफी चर्चा और ध्यान का विषय बन गया है। आज हम एक स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक होने का लाभ उठा रहे हैं, लेकिन हमें वास्तव में यह सोचने की जरूरत है कि क्या हमारे देश का प्रत्येक नागरिक वास्तव में स्वतंत्र है या सही मायने में स्वतंत्रता का आनंद ले रहा है। पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता और महिलाओं के प्रति भेदभाव पूरी दुनिया में एक पुराना मुद्दा है। इस प्रकार पुरुषों के साथ समानता की महिलाओं की चाह एक सार्वभौमिक घटना है। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, विरासत, विवाह और राजनीति आदि के मामलों में पुरुषों के बराबर होना चाहिए। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक साधन और अभिकर्ता बन गई है, जो नए ज्ञान, नए मूल्यों और मानवीय स्थितियों में सुधार के नए तरीकों को बढ़ावा देती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति से समाज का कर्तव्यनिष्ठ, जिम्मेदार नागरिक बनने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षा की प्रक्रिया से गुजरने के माध्यम से व्यक्ति को समाज की अपेक्षा के अनुरूप सोच, व्यवहार और बातचीत में ढाला जा सकता है। सांस्कृतिक रूप से महिलाओं को निम्न सामाजिक स्थिति वाला माना जाता है, जिससे उनकी शिक्षा के अवसर और विचार और भी खराब हो गए हैं। यह एक स्थापित तथ्य है कि किसी राष्ट्र का विकास उसकी पुरुष शक्ति के अधिकतम उपयोग पर निर्भर करता है। किसी भी देश के लिए विकास एवं सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वे जनसंख्या का आधा हिस्सा हैं। इसलिए, महिलाओं की आबादी के समुचित विकास और सशक्तिकरण के बिना सही मायने में राष्ट्र का विकास हासिल नहीं किया जा सकता है। भारत जैसे देश में यह बहुत जरूरी हो जाता है क्योंकि भारत पारंपरिक रूप से एक ऐसा देश रहा है जहाँ महिलाओं की पूजा सिर्फ मंदिरों में की जाती है, लेकिन अन्य सभी क्षेत्रों में महिलाएँ पूरी तरह से हाशिए पर हैं (भट्ट और इला, 1984)। जनगणना सर्वेक्षण में विषम लिंग अनुपात स्पष्ट रूप से समाज में एक लिंग के प्रति दूसरे लिंग के प्रति पक्षपात को दर्शाता है। सदियों से महिलाओं की स्थिति में कई उतार–चढ़ाव आए हैं और वर्तमान में भारतीय समाज शिक्षा और रोजगार के जरिए महिलाओं को सशक्त बनाकर लैंगिक भेदभाव को मिटाने की कोशिश कर रहा है। सामाजिक और आर्थिक प्रगति को सुविधाजनक बनाने में शिक्षा की भूमिका आज अच्छी तरह से स्वीकार की जाती है। महिला सशक्तिकरण दुनिया का ध्यान आकर्षित कर रहा है, भारत ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को अपने विकास लक्ष्यों में शामिल किया है। महिला सशक्तिकरण सभी विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक घटक है। एक राष्ट्र के रूप में भारत ने सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा को अपनाया है। पिछले 15 वर्षों में शिक्षा में लैंगिक समानता बढ़ाने के लिए बहुत कुछ किया गया है। सशक्तिकरण का तात्पर्य स्वयं पर, संसाधनों पर और निर्णय लेने पर नियंत्रण प्राप्त करने की प्रक्रिया से है। शिक्षा में सशक्तिकरण का तात्पर्य हैः (1) आत्म–पहचान, सकारात्मक आत्म–छवि और आत्म–साक्षात्कार को बढ़ावा देना। (2) आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना। (3) लिंग सहित सत्ता की लिंग आधारित संरचनाओं की समझ को गहरा करना। (4) संसाधनों तक पहुँच को सक्षम बनाना, विशेष रूप से सूचना और ज्ञान के विस्तारित ढांचे तक। (5) उपलब्ध विकल्पों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना और सूचित विकल्प बनाने की संभावना को सुविधाजनक बनाना । (6) लड़कियों की शक्ति की लिंग आधारित संरचनाओं को चुनौती देने और अपने जीवन पर नियंत्रण रखने की क्षमता को मजबूत करना। (स्थिति पत्र शिक्षा में लिंग मुद्दों पर राष्ट्रीय फोकस समूह) हिंदू महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बहुत कम थी । शिक्षा का अभाव, कम उम्र में विवाह, रोजगार के अवसरों का अभाव, पूर्ण संपत्ति अधिकारों का अभाव सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र में लिंग असमानता के मुख्य कारण माने जाते हैं। पुरुषों की श्रेष्ठता की धारणा ने पुरुष वर्चस्व और महिला निर्भरता के विचारों को जन्म दिया है। इस प्रकार अधिकांश मामलों में प्रमुख निर्णय लेने वाली भूमिकाएँ पुरुषों के अधिकार क्षेत्र में हैं। महिलाओं की स्थिति को उनके द्वारा प्राप्त समानता और स्वतंत्रता की डिग्री के संदर्भ में मापा जा सकता है। निर्णय लेने में पुरुषों के साथ महिलाओं की समान भागीदारी, अपने विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और सामुदायिक जीवन में भागीदारी उन्हें समाज में मान्यता दिलाने में मदद करती है। अभिव्यक्ति की शक्ति और अपने विचारों और विचारों के माध्यम से समस्याओं को हल करने की क्षमता महिलाओं को सभी का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम बनाती है। रोजगार के अवसर के साथ–साथ वित्तीय स्वतंत्रता एक महिला को समुदाय के साथ–साथ परिवार में भी अपनी बात रखने में सक्षम बनाती है। प्राचीन काल से ही महिलाओं को घरेलू जीवन से जोड़ा जाता रहा है, जबकि राजनीति और आजीविका को अक्सर पुरुष प्रधान गतिविधियों के रूप में देखा जाता है। हमेशा संस्कृति (लोगों के मानदंड, मूल्य और विश्वास) लैंगिक असमानताओं और समाजीकरण के साथ होती है जो समाज में महिलाओं की स्थिति निर्धारित करती है । मंगथाई (2001) के अध्ययन से पता चला है कि 73वें संशोधन की आरक्षण नीति ने महिलाओं के लिए अनुकूल वातावरण बनाया है। पति अपने समकक्षों को प्रेरित और समर्थन करते हैं लेकिन फिर भी वे महिलाओं को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके अधिकांश निर्णय उनके पतियों द्वारा प्रभावित होते थे। समाज और परिवार में महिला सशक्तिकरण निर्णय लेने के प्रभाव से निकटता से जुड़ा हुआ है। वाणिज्यिक क्षेत्रों में पुरुषों की भागीदारी और घरेलू क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को दर्शाने वाली पारंपरिक लिंग भूमिकाओं ने महिलाओं को निर्णय लेने में शामिल होने की उनकी क्षमता से वंचित किया है। निर्णय लेने को घरेलू जिम्मेदारियों में महिलाओं की भागीदारी के संदर्भ में मापा गया है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और महिलाओं के निर्णय लेने को प्रभावित करती है जो महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

राजनीतिक विकास

शिक्षा महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में सहायता करती है। शासन संरचनाओं के सभी स्तरों पर महिलाओं की भागीदारी महिलाओं के वास्तविक सशक्तिकरण के लिए इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। एलिडा ब्रिल (2000) का मानना है, ''सरकारी क्षेत्रों और सार्वजनिक नीति और बहस के हॉल के अंदर हमारी अपनी आवाज सुने बिना, हम जवाबदेही के अधिकार के बिना हैं – जो शासित लोगों की एक बुनियादी स्थापना है'' (मंडल, 2013) ख45। दुनिया भर में महिलाएँ अपने परिवारों के भीतर और बाहर बंधन, अधीनता, उत्पीड़न और सभी प्रकार के दुर्व्यवहार की बेड़ियों को तोड़ने के लिए संघर्ष कर रही हैं। उन्हें सत्ता के गलियारे में लाए बिना जहाँ वे नीतियाँ और कार्यक्रम बना सकती हैं और उन्हें लागू कर सकती हैं, महिलाओं का अस्तित्व बहुत मुश्किल है (मंडल, 2013) ख45,। शिक्षा महिलाओं को उनके अपने डर के खिलाफ लड़ाई में मदद करती है और उनकी आत्म–गरिमा को बढ़ाती है। प्रोमिला कपूर (2001) ने सही ही कहा है कि, ''वास्तव में महिला सशक्तिकरण का मतलब खुद को सशक्त बनाना है, न कि पुरुषों पर हावी होना'' (मंडल, 2013) ख45,। इस अर्थ में, महिलाओं का राजनीतिक विकास उन्हें अस्वतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो लोगों में शक्ति (यानी, कार्यान्वयन की क्षमता) को बढ़ावा देती है, जिसका उपयोग वे अपने जीवन, अपने समुदायों और अपने समाज में उन मुद्दों पर काम करके कर सकते हैं जिन्हें वे महत्वपूर्ण मानते हैं (मंडल, 2013) ख45,। यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शक्ति और ताकत हासिल की जा सकती है। महिलाओं की सार्वभौमिक भागीदारी के बिना, एक मजबूत लोकतांत्रिक समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। भागीदारी बेहतर जीवन स्थितियों को सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

निष्कर्षः

किसी भी राष्ट्र को प्रगतिशील बनाने तथा उसे विकास की ओर ले जाने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे राष्ट्रीय सुधार के लिए आवश्यक जीवंत मानवता की आवश्यक संपत्ति हैं, इसलिए यदि हमें अपने देश में महिलाओं का उज्ज्वल भविष्य देखना है, तो उन्हें शिक्षा देना हमारा प्राथमिक कार्य होना चाहिए। महिलाओं की शिक्षा समाज की स्थिति को बदलने का सबसे शक्तिशाली साधन है। शिक्षा असमानताओं में भी कमी लाती है तथा परिवार में उनकी स्थिति को सुधारने का एक साधन है। सभी स्तरों पर महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने तथा ज्ञान और शिक्षा प्रदान करने में लैंगिक पूर्वाग्रह को कम करने के लिए राज्य में विशेष रूप से महिलाओं के लिए स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। शिक्षा लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए सरकार, पंचायतों, सार्वजनिक मामलों आदि में भागीदारी की भावना विकसित करती है। अर्थव्यवस्था के विकास के लिए, महिलाओं और पुरुषों दोनों को एक साथ काम करना चाहिए और महिलाओं को अपने कौशल का उपयोग करना चाहिए। महिलाओं के सशक्तिकरण से न केवल व्यक्तिगत महिला और महिला समूहों को लाभ मिलता है, बल्कि विकास के लिए सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से परिवारों और समुदाय को भी लाभ होता है। इसलिए, महिलाओं की शिक्षा उनके सशक्तिकरण के लिए एक बहुत ही मजबूत साधन है।

संदर्भ सूची

1 भट्ट आर.ए. (2015) : ''भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका'' जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस 6:10

2 हैप्पी पी.वी. (2018): ''शिक्षा की भूमिका और परिवारों में महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति'' जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च 5:10

3 झा बी. शिक्षा :2014 महिला सशक्तिकरण और समावेशी विकास को बढ़ाने का एक साधन। शिक्षा में मुद्दे और विचार।

4 मंडल के.सी. 2013 ''महिला सशक्तिकरण की अवधारणा और प्रकार।'' शिक्षण और अध्ययन का अंतर्राष्ट्रीय मंच।

5 यूसुफ पी. 2019 ''महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका (ग्वालियर शहर, मध्य प्रदेश, भारत की महिला प्रोफेसरों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)''। सामाजिक विज्ञान की शोध पत्रिका।